सारांश / Summary

हिंदी कविता की परंपरा में 'स्त्री-कविता' पदबंध स्त्री रचनाशीलता के सांस्कृतिक उन्मेष का प्रतीक है। नौवें दशक की आमूल वैश्विक परिघटनाओं ने साहित्य, समाज तथा जनमानस की चित्तवृत्ति को अप्रत्याशित रूप से प्रभावित किया। अनामिका, कात्यायनी, गगन गिल, सविता सिंह, शुभा, अनीता वर्मा, रंजना जायसवाल, नीलेश रघुवंशी, रजनी तिलक, सुशीला टाकभौरे, निर्मला पुतुल आदि दर्जनों कवयित्रियों ने अपनी कविताओं के जरिये लोक में बसे स्त्री-मन को व्यापक संदर्भों से जोड़ा। पितृसत्तात्मक संबंधों से अलग उसे एक विश्व नागरिक और मनुष्य रूप में प्रतिष्ठित किया। स्थानीय और विश्वायन का मिश्रित स्वर स्त्री-कवियों को एक ऐसे मनुष्य की निर्मिति की ओर उन्मुख किया जो विश्व की विविधताओं को आत्मसात कर सके। सत्ता के उन्मादी व एकपक्षीय स्वरूप को चुनौती देते हुए वह नये मानव-संबंध को स्थापित करती दिखती हैं। समकालीन हिंदी कविता की एक धारा इस प्रगतिशील स्वर के साथ आगे बढ़ रही है।

भाषा की चमक-दमक से दूर संवेदन की तंतुओं को पकड़े कात्यायनी, अनामिका, सविता सिंह, गगन गिल आदि कवयित्रियों ने मानव-सभ्यता के इतिहास को स्त्री-दृष्टि से उलट-पुलट कर देखा है। जीवन के सार और सौन्दर्य को हर हाल में बचा लेने की जिजीविषा वृत्ति को पाले देश की आम जनता के उद्गार को अनीता वर्मा, रंजना जायसवाल, नीलेश, निर्मला पुतुल आदि कवयित्रियों ने एक पहचान दी है। स्त्री-कविता न सिर्फ अपने वर्तमान के प्रति सजग है बल्कि स्त्री-अस्मिता के ऐतिहासिक पहलुओं के प्रति भी चेतनशील दिखती है। भाषा व बोली की नवीन भंगिमा व अर्थ-संप्रेषण स्त्री-कविता के सृजनात्मक संसार को नवोन्मेषी वृत्तियों से जोड़ता है। स्त्री-भाषा उसी नवोन्मेषी वृत्ति का प्रतिफल है। स्त्री-जीवन के साथ सांसारिक जीवन के गूढ़ रहस्य स्त्री-भाषा में

ढलकर सहज-सुगम हो जाता है। हिंदी कविता की परंपरा में स्त्री-कविता का यह स्वर अपने समकाल को समझने की कुंजी है।

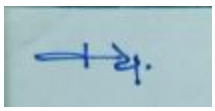

.....

कार्तिक कुमार राय

शोधार्थी